HRI Y. B. CHAVAN : The question king is a different thing which will have gone into detail. But, you wanted ow in what way they wanted to make the aid that we are giving. Mostly food grant and commodity grant for nport of miscellaneous commodities, aterials and refined petroleum products Then, there is the second commodity sterling loan, loan for the import of railway loan, loan, for the purchase of and aircraft, etc.

SHRI MAHAVIR TYAGI : How much of grant and how much of this is loan ? is the total ?

MR. CHAIRMAN : Mr. Tyagi, if you to put a question, I will call you later. Mr. Goray.

SHRI N. G. GORAY : Sir, in view of act that the economy of India and the my of Bangla Desh are in many respects lementary, has the Government seen that their plan is so evolved that it in with our plan and the two plans ne complementary ? I do not mean we should trespass on their sovereignty nything like that. But, as in Europe, instance, so many countries have come her and evolved a sort of common omic policy. Like that, is there any npt to do that ?

SHRI Y. B. CHAVAN : I think the ourable Member would appreciate that gla Desh has come into existence just and they have got their initial problem there is no question of dovetailing our with their plan. We have only offered experience in planning to them so that can make use of that. But, beyond we are not doing anything.

MR. CHAIRMAN : Yes, Mr. Tyagi.

SHRI MAHAVIR TYAGI : Sir, I uld like to know how much of this is en by way of grant and how much of is given by way of loan ?

SHRI Y. B. CHAVAN : I think I uld give this information. But, I feel I not give you the precise information on s at the present moment. Of course, re is an element of grant and there is an ment of loan in it. But, the precise infortion I am unable to give you at the esent moment.

MR. CHAIRMAN : Yes, you can give later. Yes, Mr. Anandan. This is the

SHRI T. V. ANANDAN: Sir, our country is the most philanthropic country and it is good that we are assisting Bangla Desh.... (*Interruptions*)...This is a historical fact and it is there from the days of the Puranas. Sir, the economic condition in the country being so severe and the cost of living going up ...

MR. CHAIRMAN : Therefore you should put the question.

SHRI T. V. ANANDAN :...taking into consideration the present situation in the country, is there any consideration for cancelling all the taxes that were imposed for assisting Bangla Desh ?

SHRI Y. B. CHAVAN : Whatever is our commitment, we shall certainly stand by it.

MR. CHAIRMAN : Yes, the next question please.

ANNUAL LEAVE TO MILITARY PERSONNEL

*182. SHRIMATI LAKSHMI KUMARI CHUNDAWAT :†
SHRIMATI SITA DEVI :
SHRI GANESH LAL MALI :

Will the Minister of DEFENCE be pleased to state :

(a) whether it is a fact that a fair percentage of officers and other ranks of the armed forces are not granted their entire annual leave of 60 days even during peace time;

(b) whether it is also a fact that the unavailed period of annual leave of the officers lapses with the expiry of the calendar year;

(c) whether the other ranks also cannot accumulate their leave beyond 90 days; and

(d) if so, whether any additional pay or allowances are admissible to officers and other ranks who are not permitted to avail of their annual/part annual leave; if not, the reasons therefor ?

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI JAGJIVAN RAM) : (a) to (d) A statement is laid on the Table of the House :

---

†The question was actually asked on the floor of the House by Shrimati Lakshmi

STATEMENT

(a) Except where exigencies of service so require, every effort is made to grant the entire annual leave to which the Officers and OR are entitled.

Information regarding the percentage of officers and Other Ranks not granted their annual leave is not readily available; and time and labour involved in collection of this information will not be commensurate with the results likely to be achieved.

(b) Annual leave or balance thereof not commencing in the calendar year to which it pertains lapses. However, as a special case sanction was accorded to carry forward the unavailed annual leave for 1971 to 1972 or 1973 because most of the officers and other ranks of all three Services were not permitted to avail themselves of annual leave in 1971.

(c) Gorkha personnel of Nepalese domicile and subjects of Bhutan and Sikkim may avail of 120 days accumulated annual leave every alternate year; all Other Ranks serving in Indian Missions abroad may also accumulate annual leave up to 120 days.

(d) In the Central Government service, whether civil or military, there is no scheme to encash unavailed leave.

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत : श्रीमन्, उनको छुट्टी एक्युमुलेट क्यों नहीं करने दी जाती और दी क्यों नहीं जाती है यह जबानी कह दें तो बेहतर है ।

श्री विद्याचरण शुक्ल : उनकी छुट्टी इसलिए एक्युमुलेट नहीं की जाती है क्योंकि हम लोग चाहते है कि हमारे सैनिक और अफसर जो सेनाओं में काम करते है वे हर साल छुट्टी लें, इससे उनके स्वास्थ्य पर अच्छा असर होगा और उन्हे अपने परिवार और घरबार मे रहने की सुविधा मिलती है । इसलिए हम चाहते हैं कि उन्हे हर साल छुट्टी लेनी चाहिए । केवल 71-72 मे हमने उनको छुट्टी नही लेने दी थी । अब फिर से हमने उनको इजाजत दे दी है कि उस छुट्टी को 72-73 मे ले सकते है ।

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत : मेरा पहला प्रश्न यह है कि फेयर परसेंटेज आफ आफीसर्स और सैनिकों को छुट्टी नहीं मिलती, अपने घर जाने के लिए उन्हे छुट्टी ही उपलब्ध नही होती और आप कहते हैं कि हर साल छुट्टी देते हैं ।

श्री विद्या चरण शुक्ल : हम लोगों की सूचना यह है कि हम साधारणतः हर दम छुट्टी दे देते है बहुत ही कोई विशेष कारण हुआ, तब उनको शांति के समय छुट्टी नही दी जाती है, अन्यथा शांति के समय छुट्टी दी जाती है कभी अपवाद स्वरूप किसी केस में या किसी एक मामले में न दी जाय तो अलग बात है ।

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत : सभापति महोदय, मैं फिर जोर देकर कहती हूं कि फेयर परसेंटेज को बराबर छुट्टी हर साल नही मिलती है अगर छुट्टी नही देते तो उनको मोनोटरी बेनिफिट क्यों नही दिया जाता ? मोनोटरी बेनिफिट भी न मिलता, घर जाने के लिए छुट्टी भी नही मिलती ।

श्री विद्या चरण शुक्ल : यदि माननीय सदस्य के पास कोई ऐसा मामला है जिसमें छुट्टी नही गई शांति के समय तो वह हमें दे दें, मैं उसकी जांच करवा लूगा लेकिन यह बात अपवादस्वरूप होगी । साधारणतया ऐसा नहीं होता है ।

जहां तक पैसे-रुपए का कम्पेनसेशन देने का सवाल है, यह प्रक्रिया न तो हमारी सेनाओं में है न हमारे यहा के जो असैनिक कर्मचारी है उनके बीच मे चलती है और चूंकि यह प्रक्रिया नहीं चल रही है इसलिए हम इसे शुरू भी नही करना चाहते ।

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत : क्यों नहीं करना चाहते ?

श्री सभापति : बस हो गया ।

श्रीमती सीता देवी : क्या मंत्रीजी यह बताएंगे कि उन्होंने प्रश्न (ख) के जवाब मे यह कहा है कि 1971 में जिनको छुट्टी नही मिली उन्हे उन्हे स्पेशली 1972-73 मे इजाजत दी है, तो क्या यह परमीशन केवल 1972-73 के लिए है या आगे भविष्य मे भी वे सैनिक जो छुट्टी न ले सके उनको यह कंसेशन मिल सकेगा ।

दूसरे (ग) में आपने यह जवाब दिया है कि नेपाली वंश के गोरखा और भूटान और सिक्किम के जो सैनिक हैं या विदेशों मे जो भारतीय सैनिक हैं उनके लिए आपने यह परमीशन दी है कि उनको 120 दिन तक की छुट्टी मिल सकती है। मैं यह जानना चाहती हूं कि उनको आपने यह परमीशन दी है तो जो और सैनिक हैं उनके लिए यह सुविधा क्यो नही दी।

श्री विद्या चरण शुक्ल : सभापति महोदय, जो पहला प्रश्न है उसका उत्तर मैं दे ही चुका हूं कि जो 1971 मे छुट्टी नही ले सके उन्हें 1972-73 में इस तरह की छुट्टी जोड़कर लेने की इजाजत दी जायगी। यह हमारा नियम है कि इस तरह की छुट्टी हम लोग साधारणतः नहीं देते है। फिर चूकि 1971 में हमारे ऊपर आक्रमण की आशंका थी जिसके कारण हम ने कुछ लोगों को छट्टी नहीं लेने लेने दी थी, इस लिए हमने असाधारण कार्य किया है जिसको हर साल करने का हम लोगों का इरादा नहीं है। जहां पक नेपालीज का सवाल है,आप जानते हैं कि इसमे केवल उन नेपालीज और गोरखो को सुविधा दी गई है जो कि नेपाल के रहने वाले हैं, भूटान और सिक्किम के रहने वाले हैं। ऐसे गोरखों को यह सुविधा नही दी गई है जो कि गोरखा होने के बावजूद भी हिन्दुस्तान के ही नागरिक है। इसी तरह की सुविधा हमने ऐसे कर्मचारियो को भी दी है जिनको हिन्दुस्तान के बाहर कार्यवश रहना पड़ता है। इस तरह की सुविधा साधारणतः हम उनको नहीं देते है जो कि हिन्दुस्तान के अन्दर रह कर के अपना कार्य करते है।

श्रीमती सविता बहन : मैं मिनिस्टर महोदय से सिर्फ यह जानना चाहती हूं कि अक्सर देखा गया है कि जो युनिट्स होती है उनमें आफिसर्स कम होते हैं और जो ऐन्युअल लीव उन्हें ड्यु होती है, जो उन्हें मिलनी चाहिये, चूकि बारी बारी आफिसर छुट्टी जाते है, इसलिए कई अफसरों को वह छुट्टी उस साल मे नही मिल पाती है, उसके लिए क्या आपने कोई ऐसा तरीका रखा है कि जो बेचारा घर से दूर रहकर के ड्यूटी देता है और साल मे एक बार छुट्टी जाता है उसको वह छुट्टी जरूर मिले। मैं इस बात से सहमत हूं कि वे छुट्टी में जायं क्योंकि वे छुट्टी इनज्वाय करते हैं, वहा रहते है, बैठते हैं, लेकिन वह छुट्टी जरूर मिले, इस चीज को देखना चाहिये। क्या मिनिस्टर महोदय बताने की कृपा करेंगे कि कौन से ऐसे कदम उठाये जा रहे हैं जिनसे हर एक आफिसर को ऐन्युअल लीव पूरी तरह मिल सके।

श्री विद्या चरण शुक्ल: मैने बताया, सभापति महोदय, कि हम लोग इस बात को देखते है और इस बात को पूरा करते है कि हर एक व्यक्ति को छुट्टी मिले। अगर कोई छुट्टी लेना न भी चाहे तो हम उससे कहते है कि यदि वह छुट्टी नहीं जायगा तो उसकी छुट्टी लैप्स हो जायगी। इस लिए समय-समय पर जैसी आवश्यकता होती है उसके अनुसार हम छुट्टी देते है। एक साथ सब अफसरो को हम छुट्टी नहीं दे सकते है। पर यह हमारा नियम है और नीति है कि हर एक अफसर को, हर एक जवान को और हर एक नान कमीशड अफसर को हम छुट्टी देते है और इस तरह के हमने नियम बना रखे है कि उनको पूरी छुट्टी लेनी ही पड़ती है। हो सकता है कि एक आध को छुट्टी न दी हो, पर वैसे हर एक आफिसर, एक-एक जवान और हर एक नानकमिशंड आफिसर को हम लोग छुट्टी लेने के लिए लगभग बाध्य करते हैं।

ASSISTANCE FROM U. S. S. R.

*183. SHRI SASANKA SEKHAR SANYAL : Will the Minister of FINANCE be pleased to state :

(a) what commercial, financial, technical and ancillary assistance and assistance in the shape of articles of consumption was obtained by India from U. S. S. R. in the years 1969, 1970 and 1971; and

(b) the value of such assistance in terms of Indian Currency ?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI Y. B. CHAVAN) : (a) Machinery, equipment and technical services have been received under various Soviet Credit Agreements during 1969, 70 and 71, but no articles of consumption.

(b) Period		Soviet Credits (Rs. in millions)
1969	....	541.5
1970	....	396.8
1971	....	160.2